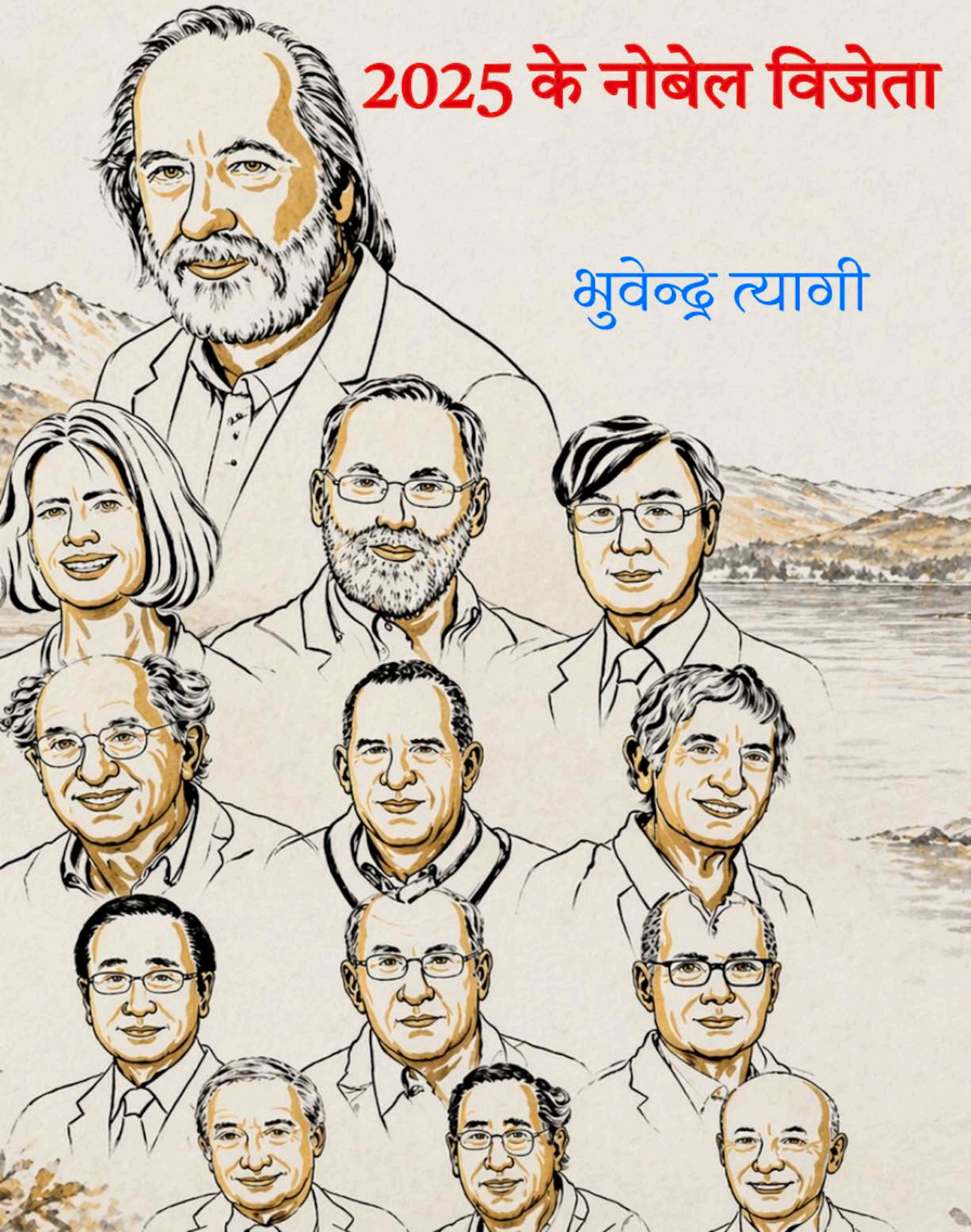


2025 के नोबेल विजेता

भुवेन्द्र त्यागी



2025 के नोबेल विजेता



भुवेंद्र त्यागी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अप्रैल, 2026

© भुवेंद्र त्यागी

अनुक्रम

भूमिका: नोबेल पुरस्कारों का इतिहास

चिकित्सा: मैरी एलिजाबेथ ई. ब्रुनको, फ्रेड रैम्सडेल और शिमोन सकागुची

भौतिकी: जॉन क्लार्क, मिशेल हेनरी डेवोरे और जॉन मैथ्यू मार्टिनिस

रसायन विज्ञान: सुसुमु कितागावा, रिचर्ड रॉब्सन और उमर एम. याघी

साहित्य: लास्तो क्रास्नाहोरकाई

शांति: मारिया कोरिना मचाडो

अर्थशास्त्र: जोएल मोकिर, फिलिप एगियन और पीटर हॉविट

दस भारतवंशी नोबेल विजेता

संदर्भ स्रोत

भूमिका: नोबेल पुरस्कारों का इतिहास

हथियारों की कमाई मानवता के काम आई

नोबेल पुरस्कार हर साल विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किए जाते हैं। स्वीडिश रसायनज्ञ और उद्योगपति अल्फ्रेड नोबेल की 1895 की वसीयत के अनुसार ये पुरस्कार उन लोगों को दिए जाते हैं, जिनकी पिछले वर्ष के दौरान मानवता को सबसे बड़ी देन रही हो। ये पुरस्कार चिकित्सा या शरीर विज्ञान, भौतिकी और रसायन विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण खोज और आविष्कार के लिए, साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए, शांति और मानवतावाद को बढ़ावा देने के लिए और अर्थशास्त्र के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए दिए जाते हैं।

प्रत्येक नोबेल पुरस्कार विजेता को स्वर्ण पदक, प्रशस्ति पत्र और नकद पुरस्कार दिया जाता है। नकद पुरस्कार एक करोड़ स्वीडिश क्रोना (लगभग 8.3 करोड़ रुपए) होता है। पुरस्कार अक्टूबर में घोषित किए जाते हैं और पुरस्कार समारोह हर वर्ष 10 दिसंबर को अल्फ्रेड नोबेल की पुण्यतिथि पर आयोजित किए जाते हैं।

अल्फ्रेड नोबेल ने हथियारों, बारूद और डायनामाइट से अकूत संपत्ति कमाई थी, लेकिन उन्होंने उसमें से ज्यादातर मानवता के लिए काम कर रही दुनिया भर की नामी शख्सियतों को पुरस्कृत करने के लिए दे दी। नोबेल ने वसीयत में अपनी संपत्ति को

पांच पुरस्कार स्थापित करने के लिए लगा दिया, जिन्हें 'नोबेल पुरस्कार' के रूप में जाना जाने लगा। नोबेल पुरस्कार पहली बार 1901 में दिए गए थे। स्वीडिश केंद्रीय बैंक ने 1968 में नोबेल की स्मृति में अर्थशास्त्र में पुरस्कार की स्थापना के लिए फंड दिया। यह पुरस्कार भी नोबेल संस्थान द्वारा ही दिया जाता है।

एक पुरस्कार तीन से अधिक व्यक्तियों के बीच साझा नहीं किया जा सकता है। हालांकि नोबेल शांति पुरस्कार तीन से अधिक लोगों के संगठनों को प्रदान किया जा सकता है। नोबेल पुरस्कार मरणोपरांत नहीं दिए जाते हैं। यदि किसी को पुरस्कार घोषित किया जाए और प्राप्त करने से पहले उसकी मृत्यु हो जाए, तो उसे मरणोपरांत पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

अल्फ्रेड नोबेल की दिलचस्प कहानी

अल्फ्रेड नोबेल की कहानी बहुत दिलचस्प है। उनका जन्म 21 अक्टूबर 1833 को स्वीडन के स्टॉकहोम में हुआ था। वह एक समृद्ध अभियंता परिवार के थे। बड़े होकर रसायनज्ञ, अभियंता और आविष्कारक बने।

जब नोबेल ने काम शुरू किया, तो खदानों में इस्तेमाल के लिए एकमात्र भरोसेमंद विस्फोटक ब्लैक पाउडर था, जो बारूद का एक रूप है। उन दिनों खोजा गया एक तरल यौगिक नाइट्रोग्लिसरीन बहुत शक्तिशाली विस्फोटक था, लेकिन यह इतना

अस्थिर था कि इसे किसी भी तरह की सुरक्षा से नियंत्रित नहीं किया जा सकता था। फिर भी नोबेल ने 1862 में नाइट्रोग्लिसरीन बनाने के लिए एक छोटा कारखाना लगाया और विस्फोटक के विस्फोट को नियंत्रित करने का एक सुरक्षित तरीका खोजने की उम्मीद में अनुसंधान किया। उन्होंने 1863 में एक व्यावहारिक डेटोनेटर का आविष्कार किया। उसमें लकड़ी का प्लग होता था, जिसे धातु के कंटेनर में रखे नाइट्रोग्लिसरीन के बड़े चार्ज में डाला जाता था। प्लग के काले पाउडर के छोटे चार्ज के विस्फोट से तरल नाइट्रोग्लिसरीन के बहुत अधिक शक्तिशाली चार्ज का विस्फोट होता था। इस डेटोनेटर ने एक आविष्कारक के रूप में नोबेल की ख्याति की शुरुआत के साथ-साथ उन्हें विस्फोटकों के निर्माता के रूप में स्थापित कर दिया। ब्लास्टिंग कैप के आविष्कार ने उच्च विस्फोटकों के आधुनिक उपयोग की शुरुआत की।

नाइट्रोग्लिसरीन इतना खतरनाक था कि नोबेल के नाइट्रोग्लिसरीन कारखाने में 1864 में हुए विस्फोट में उनके छोटे भाई एमिल और कई अन्य लोग मारे गए। इस दुखद दुर्घटना से विचलित हुए बिना नोबेल ने अपने ब्लास्टिंग कैप के साथ नाइट्रोग्लिसरीन बनाने के लिए कई कारखाने लगाए। नोबेल का दूसरा महत्वपूर्ण आविष्कार था नाइट्रोग्लिसरीन। उन्होंने नाइट्रोग्लिसरीन को सूखने तक अवशोषित किया। यह पदार्थ नाइट्रोग्लिसरीन की तुलना में उपयोग करने के लिए अधिक सुरक्षित और संभालने में आसान था। नोबेल ने नए उत्पाद का नाम डायनामाइट रखा। उन्होंने

ब्रिटेन (1867) और अमेरिका (1868) में इसे पेटेंट कराया। डायनामाइट ने नोबेल की प्रसिद्धि को दुनिया भर में फैला दिया। जल्द ही सुरंग और नहर बनाने और रेलवे और सड़कों के निर्माण में इसका इस्तेमाल किया जाने लगा।

1870 और 80 के दशक में नोबेल ने डायनामाइट बनाने के लिए पूरे यूरोप में कारखानों का एक नेटवर्क बनाया। उन्होंने बेहतर विस्फोटकों की तलाश में प्रयोग करना जारी रखा और 1875 में डायनामाइट के अधिक शक्तिशाली रूप ब्लास्टिंग जिलेटिन का आविष्कार किया। इसे उन्होंने अगले वर्ष पेटेंट कराया। नोबेल ने 1887 में पेश किया बैलिस्टाइट। विस्फोटकों में अल्फ्रेड की दुनिया भर में रुचि और रूस में अपने भाइयों की कंपनियों में उनकी खुद की हिस्सेदारी ने उन्हें बहुत अमीर बना दिया। सन 1893 में उनकी दिलचस्पी स्वीडन के हथियार उद्योग में हो गई। अगले साल उन्होंने लोहे का एक कारखाना बोफोर्स खरीदा। यह प्रसिद्ध बोफोर्स हथियार बनाने का केंद्र बन गया। विस्फोटकों के अलावा नोबेल ने कृत्रिम रेशम और चमड़े के भी आविष्कार किए थे। उन्होंने विभिन्न देशों में 350 से अधिक पेटेंट पंजीकृत किए।

नोबेल के जटिल व्यक्तित्व ने उनके समकालीनों को हैरान कर दिया। हालांकि उनके व्यापारिक हितों के लिए उन्हें लगभग लगातार यात्रा करनी पड़ती थी, लेकिन वे एकांतप्रिय व्यक्ति थे और उन्हें अवसाद के दौर पड़ते थे। उन्होंने सादा जीवन जिया।